# समाधान के लिये सहमति के साथ समान्तरता

सहमति और समान्तरता में से मीडिया किस गुण विशेषता का चुनाव करे-यह नीति-व्दंद अक्सर मीडिया में उपस्थित होता हैं। पर रोहित कुमार जैसी स्पष्टता के लोग हों तो ऐसा व्दंद अधिक समय परेशान नहीं करेगा। इस पहेलीनुमा बात को स्पष्ट करना जरूरी है। रोहित कुमार जालोर (राजस्थान) के जिलाधीश हैं। भीनमाल तहसील और जालोर के सबसे बड़े नगर में पत्रकारों के एक कार्यक्रम में वे आमंत्रित थे, जहाँ मूल्यनिष्ठ समाज की रचना में मीडिया की भूमिका पर चर्चा हो रही थी। अपनी समापन बातचीत में उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर मीडिया के प्रभाव को स्वीकार किया। उन्होंने बताया कि उनके जनसुनवाई के कार्यक्रम मीडिया के सहयोग से न केवल सफल रहे हैं वरन लोगों को सशक्त भी कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक दलित महिला का उल्लेख किया जिसने पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में ही थानेदार की न केवल शिकायत की वरन यह भी कहा कि पूर्व में की गई शिकायत के बावजूद वह अब भी परेशान करता है। उन्होंने कहा यह महिला ऐसा साहस मीडिया में आई सफल कहानियों के कारण कर सकी। ऐसे ही अन्य प्रसंग के सम्बन्ध में अपनी कार्यवाही का उल्लेख करते हुए कहा कि वे यह स्वीकार करते हैं कि कई मामलों में पत्रकार का सूचना-तंत्र उनके विभाग के सूचना-तंत्र से ज्यादा विश्वसनीय तथा त्वरित होता है। और इसलिए वे समाचार पत्र की सूचनाओं पर लिपिकीय प्रकिया  के पूर्व कार्यवाही करते हैं। यह भी पत्रकार की विश्वसनीयता की पुष्टि ही हैं।

पर बात जहाँ से शुरू हुई थी, वह इससे कुछ भिन्न है। उन्होंने एक स्कूल के ऐसे विद्यार्थी का हवाला दिया जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के बाद भी प्रवेश पाने के लिए भटक रहा था। उन्होंने बताया कि इस गड़बड़ी को एक पत्रकार ने बताया था। जब उन्होंने उस पत्रकार से जानना चाहा कि इस समस्या का समाधान उनका ध्येय है या इस प्रसंग को प्रकाशित करना लक्ष्य हैं। पत्रकार ने जब कहा कि समस्या का समाधान ही पत्रकारिता का भी ध्येय है, तब उन्होंने कहा कि वे इसका प्रवेश हो जाये, इसका प्रबंध करेंगे। इस प्रसंग का आधार लेते हुए उन्होंने कहा कि प्रशासन या पत्रकारिता को समस्या के समाधान की तरफ ही जाना चाहते हैं। सुव्यवस्था प्रशासन का लक्ष्य है और गड़बड़ी की उजागिरी या प्रकाशन पत्रकारिता इसलिए करती हैं कि समस्या का समाधान हो। तब प्रकाशन के पूर्व प्रकाशित सूचना के प्रभाव तथा उसके कारण होने वाली तनातनी या ढील या लुकाछिपी अथवा अहंता के संघर्ष का विचार करना उचित ही हैं।

जिलाधीश रोहित कुमार की दृष्टि में स्पष्टता है। वे व्यवहार के तल परस्थितियों को जानते हैं। वे यह भी जानते हैं किस तरह पत्रकारों के कन्धों का उपयोग न्यस्त स्वार्थ या सत्ता के बिचौलिये करते हैं। इस अर्थ में प्रशासन ही नहीं व्यवस्था के सभी आधारों में सहमति और समान्तरता  का प्रयोग एक साथ तथा विवेकपूर्ण हो। यानि जहाँ मानवीय भूल अथवा नैसर्गिक उपेक्षा या दुर्लक्ष्य हुआ है, जहाँ इरादे और इच्छा में न तो खोट है और न बेईमानी है, जहाँ उत्तरदायी व्यक्ति अपनी भूल तत्काल सुधारने के लिए तत्पर है, वहां व्यावहारिक उपाय से समाधान करना अधिक ठीक उपाय है। उसे प्रकाशित कर झंझावात में उलझाना या समस्या को विलम्बित न्याय के लिए अवसर देना ठीक नहीं होगा।

एक तरह से यह ठीक ही है कि मानवीय मूल्यों के प्रोत्साहन तथा क्रियान्वयन के लिए उन व्यावहारिक दृष्टियों तथा उपायों को भी ध्यान में रखा जाये। केवल समांतरता से मूल्यों को अपनाने कि इच्छा संघर्ष या व्दंद पैदा कर सकती है। ऐसे में, कोई भी संघर्ष या व्दंद मूल्यों के लिए जरूरी सहयोग, प्रेम, आत्मीयता पैदा करने कि बजाय इन गुणों को दूर ही करेगा। तब चाहते हुए भी ऐसा वातावरण बनाने में कठिनाई तो होगी। यह इसलिए भी सोचना चाहिए क्योंकि पत्रकारिता अंतत: क्रिया नहीं, विचार, सुझाव, सलाह या उत्प्रेरणा है। क्रिया और उसके कर्ता कोई अन्य हैं-वे व्यक्ति हैं जो उत्तरदायित्व के साथ भूमिका का निर्वहन करते हैं-वे मशीन नहीं हैं जो संवेदना या अहंता के राग-विराग से मुक्त हों।

ooo